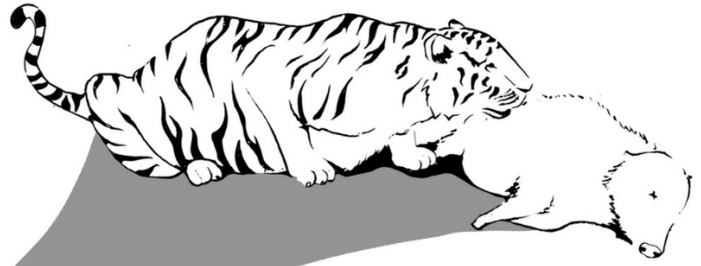
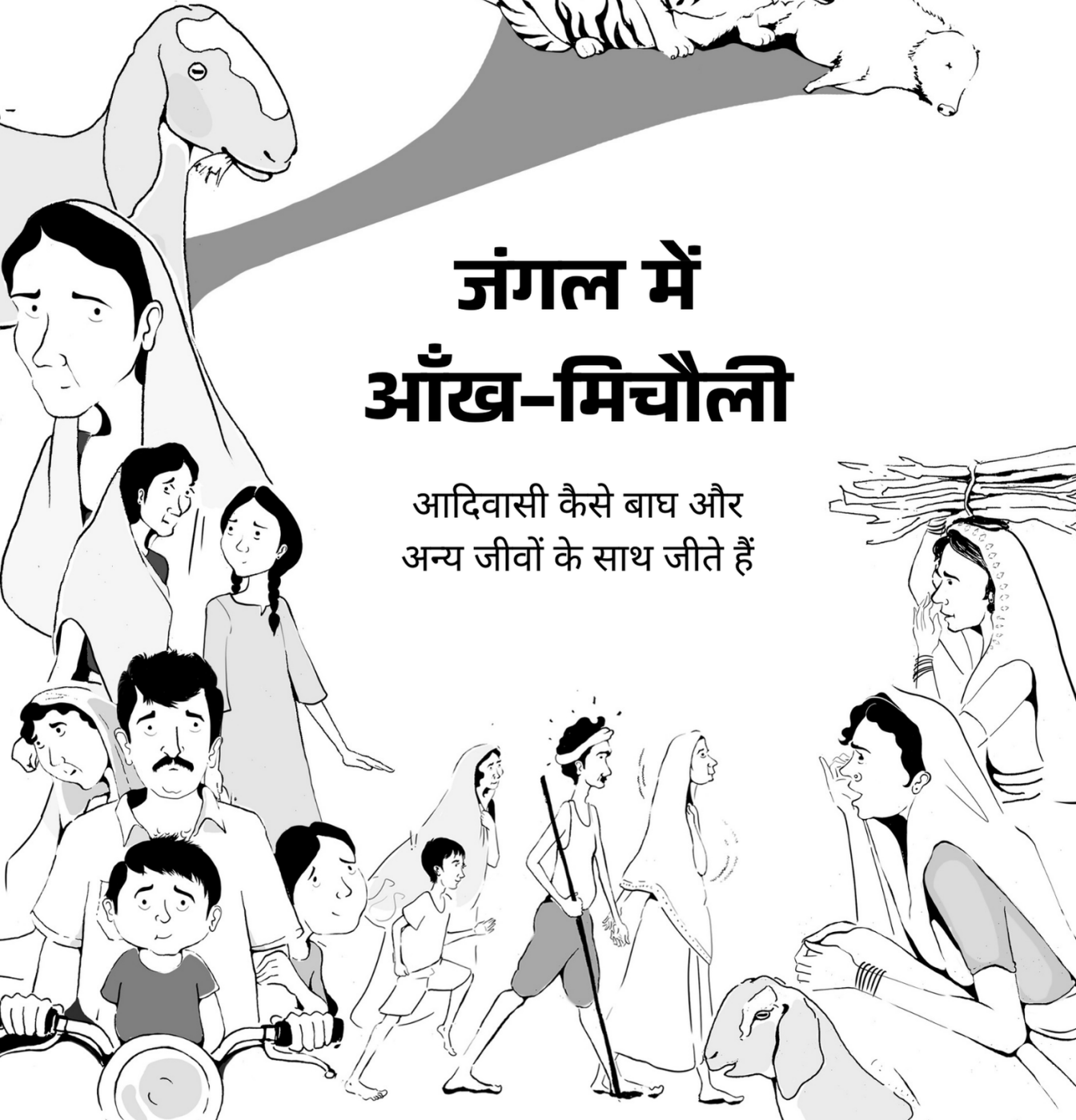


धात्री - महिलाओं और बच्चों के लिए एक संसाधन केंद्र



# जंगल में आँख-मिचौली

आदिवासी कैसे बाघ और  
अन्य जीवों के साथ जीते हैं



**संग्रहित कहानियाँ:** गोनी बाई, अजय गोंड, जनका बाई गोंड, कपूर सिंह गोंड, सुशीला गोंड, प्यारी गोंड

**संकलन:** अर्पिता बाई नायक

**चित्रण:** केविन विजी

**संपादक:** दिव्या मखीजा

**हिंदी अनुवाद:** प्रज्वल चंद्रकांत गायकवाड़

पन्ना की सभी आदिवासी महिलाओं और बच्चों को समर्पित पुस्तक  
(और बाघों और सभी बड़े और छोटे जीवों को)

**प्रकाशक:**

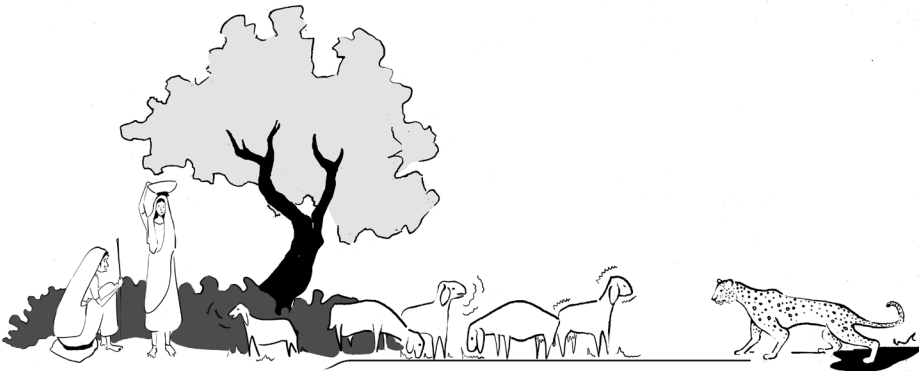


**DHAATRI**

धात्री - महिलाओं और बच्चों के लिए एक संसाधन केंद्र,  
प्लॉट नंबर 10, लोटस पॉन्ड कॉलोनी, एम.डी.फार्म रोड,  
तिरुमलगिरी, सिक्ंदराबाद, तेलंगाना, भारत

**अगस्त 2024**

© धात्री, 2024



## जंगल में आँख-मिचौली

आदिवासी कैसे बाघ और अन्य जीवों के साथ जीते हैं



## धात्री

महिलाओं और बच्चों के लिए एक संसाधन केंद्र





## जंगल में आँख-मिचौली

### आदिवासी कैसे बाघ और अन्य जीवों के साथ जीते हैं

#### परिचय – यह पुस्तक क्यों?

पन्ना के जंगल में हमारे आदिवासी मित्रों से मिलने आने वाले सभी आगंतुकों का एक ही सामान्य प्रश्न होता है: क्या आपने कभी बाघ देखा? क्या बाघ आपके गांव में आता है? जब आप बाघ को देखते हैं तो क्या करते हैं? जंगली बिल्लियों की चकाचौंध में फंसे जिज्ञासु यात्री के लिए यह सभी रोमांचक प्रश्न हैं। स्थानीय आदिवासियों के लिए, जंगल बाघों और अन्य सभी प्राणियों के साथ हर दिन बातचीत करने का एक दैनिक खेल है – कभी-कभी रोमांचक, लेकिन आम तौर पर चुनौतीपूर्ण, तनावपूर्ण और अन्यायपूर्ण होता है। क्योंकि वन संरक्षण में प्रबल धारणा समुदाय को संरक्षण से दूर करना है, जो आदिवासियों और अन्य वन प्राणियों की सह-अस्तित्व की क्षमताओं के प्रति अप्रासंगिक है। आज की वास्तविकता में सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को अस्थिर बना दिया गया है।

भारत के मध्य प्रदेश का पन्ना जिला, गोंड आदिवासियों की आबादी वाला एक जिला है। सदियों से, इसे गोंडवाना क्षेत्र, गोंड राजाओं के राज्य के रूप में जाना जाता था। लेकिन आज, बाघ पन्ना नेशनल पार्क और टाइगर रिजर्व का राजा बन गया है, जो जंगलों की लूट और औपनिवेशिक और सामंती पौरुष वीरता के कारण बाघों के विनाश को रोकने के अपने प्रयास में एक प्रतिस्पर्धी राज्य बन गया है। जैसे ही बाघों की ट्रॉफियों ने जंगल को इन जंगली बिल्लियों से वंचित कर दिया, आदिवासियों को या तो खुद को जंगल से बाहर निकालने के लिए मजबूर होना पड़ा या फिर आए नए बाघों से निपटने की कोशिश में लगातार डर में जीना पड़ा। जबकि देश पन्ना के बाघ पुनर्जीवन की सफलता का जश्न मना रहा है, बाघ और आदिवासियों और कई जीवों के लिए कई चुनौतियाँ सामने आई हैं। उनका सह-अस्तित्व कई बाहरी कारकों से खतरे में है – कोर क्षेत्र में खनन, प्रकृति आधारित समाधान के नाम पर लगाई गई बाड़बंद पौधारोपण जो उनकी गतिशीलता को बाधित करते हैं, जंगल के चारों ओर पर्यटन, और बाघ अभयारण्य व उसके गलियारों के प्रस्तावित जलमग्न होने की योजना।

शहरों में रहने वाले हम लोगों के लिए वन्यजीव संरक्षण राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है और रोजमर्रा की जिंदगी से दूर रहने के लिए छुट्टियों के दौरान सफारी पर जाने का एक रोमांचक अवसर है। हमारे वन्यजीव रोमांच के लिए बाघों को देखने के लिए ट्रेल्स और जीप की सवारी बनाई गई है। इको-टूरिज्म के नाम पर राजमार्ग, रिसॉर्ट और रेस्तरां तेजी से बढ़ रहे हैं, जो आज जंगल और बाघों से भी अधिक जगह घेर रहे हैं। फिर भी, बाघों और आदिवासियों को संरक्षण के बारे में हमारी धारणाओं की अनुचित विडंबनाओं का सामना करना पड़ता है। आदिवासियों से बार-बार कहा जाता है कि उनकी उपस्थिति बाघों के जीवन के लिए खतरा है। उन्हें बेरहमी से बाहर धकेला जाता है, अक्सर शिकार का दोषी ठहराया जाता है, बिखेर दिया जाता है और भुला दिया जाता है, जबकि हर दिन जीपों और ट्रकों का अंतहीन काफिला जंगल में तेजी से दौड़ता रहता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता

कि वे जंगलों को तेजी से खत्म कर रहे हैं और बाघों व अन्य सभी जीवों के लिए आवागमन की जगहें सिकुड़ती जा रही हैं।

फिर भी, हर दिन जब आदिवासी अपने जंगल के रोज़मर्रा के जीवन से घर लौटते हैं, तो अलाव के पास कई मज़ाक और कहानियाँ साझा की जाती हैं। क्योंकि हास्य अक्सर भय और त्रासदी का सबसे अच्छा उपाय होता है, और आदिवासी जीवन व दर्शन इसी के इर्द-गिर्द घूमता है। हँसी-ठिठोली के बीच बुजुर्ग अपने बच्चों को समझाते हैं कि स्कूल जाते समय, तालाब में नहाते समय, लकड़ी या जंगली भोजन इकट्ठा करते समय कैसे सतर्क और सावधान रहना चाहिए। वे चुपचाप अपने बच्चों को यह भी सिखाते हैं कि कैसे हँसते हुए जीवन को आगे बढ़ाना है, भले ही उनके प्रिय बकरी या गाय को किसी जंगली जानवर ने मार दिया हो—यह जानते हुए भी कि वही बकरी उनके अस्तित्व का एकमात्र सहारा थी।

ये छोटी-छोटी मुठभेड़ इस बात की एक झलक मात्र हैं कि किस तरह वनवासी समुदायों के सह-अस्तित्व के तरीके उनके आवासों के आसपास घूमने वाले वन्यजीवों से निपटने और किसी तरह जीवित रहने में मदद करते हैं। वे बाघ की आँखों में देखते हुए अनिश्चितता की भाषा का आदान-प्रदान करते हैं क्योंकि बाघ और आदिवासी दोनों के लिए जीवन बहुत कठिन होता जा रहा है क्योंकि शहरी माँगों के कारण उनका परिदृश्य अधिक से अधिक अशांत होता जा रहा है। फिर भी, सह-अस्तित्व के लिए उनका संघर्ष हास्य, लचीलता और नुकसान की स्वीकृति के साथ जारी है। क्योंकि, जब बाघ के खतरों से नहीं, बल्कि वैश्विक उत्तर से संचालित जलवायु समाधानों में निहित वास्तविक खतरों का सामना करना पड़ता है, तो कोई और कैसे सामना कर सकता है।

**२२२२ – बाघ आ रहा है...**

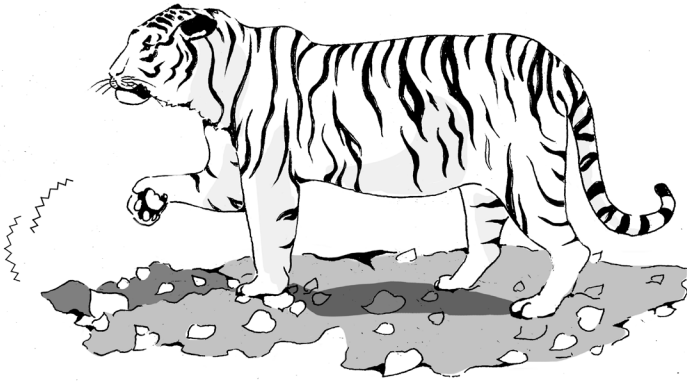
## बाघ के साथ सरसराहट खेल



उमरावन गांव की रोहिणी और राहुल अपने प्रचलित रस्ते पर तीन किलोमीटर चलते हैं, वहा से रोहिणी स्कूल के लिए बस लेती है। राहुल पर रोहिणी को गांव के बाहर बस स्टॉप तक छोड़ने का काम सौंपा गया है ताकि रोहिणी को जंगल में अकेले चलने की नौबत ना आये।



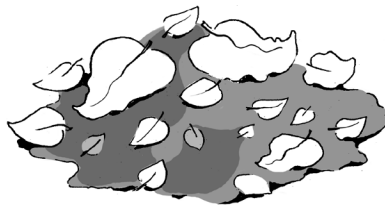
कभी-कभी, वे उस रास्ते को चुनते हैं जहाँ से निकलते समय उनके पैरों के नीचे सबसे अधिक सूखी पत्तियाँ को कुचलकर सिरसिराहट हो। पैरों के निचे से आनेवाली सिरसिराहट उन्हें हर्षित करती है। लेकिन यह सूखे पत्तियों की हर्षित सिरसिराहट हमेशा उनकी नहीं होती। कभी-कभी यह सिरसिराहट की वजह होती है आस-पास छुपे हुए खुशमिजाज साझीदार - एक बाघ की।



हो सकता है बाघ भी उनके साथ पत्तों के सरसराहट में शामिल होना चाहता हो। आखिरकार यह एक रोचक आवाज़ है। एक बार, बाघ उनसे कुछ कदम आगे निकल गया, और वे धीरे-धीरे उसके पगडंडी का पीछा करते हुए उसके पीछे-पीछे चल पड़े, ताकि देख सकें कि वह क्या कर रहा है। अब वे अंतर करना जानते हैं कि कौन सा बाघ शिकारी पर हैं और कैसा बाघ यथावकाश में टहल रहा है - केवल उसके पैरों से होनेवाले सरसराहट के आवाज से।



एक बार, पत्तों के सरसराहट ने उन्हें आगाह कर दिया था कि उनके पीछे एक बाघ है। अब वे बता सकते हैं, पहले सुनी गई आवाज़ों के अनुभव से की लगभग यह बाघ कितना बड़ा या छोटा है। अंदाज़ा लगाने का अब यह एक नया खेल है। जब उन्हें कोई बाघ नहीं दिखता, लेकिन उसके पदचिन्ह मिलते हैं, तो वे गाँव वालों को बताते हैं कि बाघ गाँव की ओर चल रहा है। अब सरसराहट की आवाज़ उनकी जाँच का एक साधन है; और बच्चों के लिए, यह स्कूल जाने के रास्ते में ढलने वाली बाघ की एक और पगडंडी।



## अचंभ की साइकिल सैर



एक दिन दोपहर से ठीक पहले उमरावन के आसपास अकेले साइकिल की सैर करते हुए राहुल को याद है कि उन्होंने पहली बार बाघ देखा था। उससे करीब दो मीटर की दूरी पर एक तालाब में बाघ आराम कर रहा था।



“फिर आपने क्या किया?” लोग उससे उसकी भयावह मुठभेड़ के बारे में पूछते हैं, एक डरावनी कहानी की आशंका में।

“बस साइकिल तेज़ किया और निकल गए, और क्या?”

बाघ के साथ इस पहली मुठभेड़ के विपरीत, अगले कुछ बार, राहुल को बाघ से मिलने से पहले बाघ की कहानियों के साथ मुलाकात की गई।



एक सुबह गांव में खबर फैली कि एक बाघ ने किसी चरती हुई गाय को अपना शिकार बना लिया है। कुछ लोग घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े और कुछ लोग इस खबर को दूसरों तक पहुंचने निकल पड़े।





यह ख़बर पाकर राहुल ने दोबारा बाघ से मिलने का मौका नहीं छोड़ा। पिछली बार की अपेक्षा इस बार उसे बाघ से मिलने की ख़ुशी अधिक है, क्योंकि इस बार वह उत्सुकता से भरा हुआ था।

हालाँकि, जैसे ही वह उस जगह पहुँचा, राहुल का कुतूहल निराशा में बदल गई। बाघ को गाय को लोगों की भीड़ से दूर खींचकर ले जाकर दूसरों की संगति के बजाय एकांत चुना। शायद उसने उस भोजन के लिए सिर्फ़ एक ही टेबल आरक्षित की थी।



## डर की रोशनी

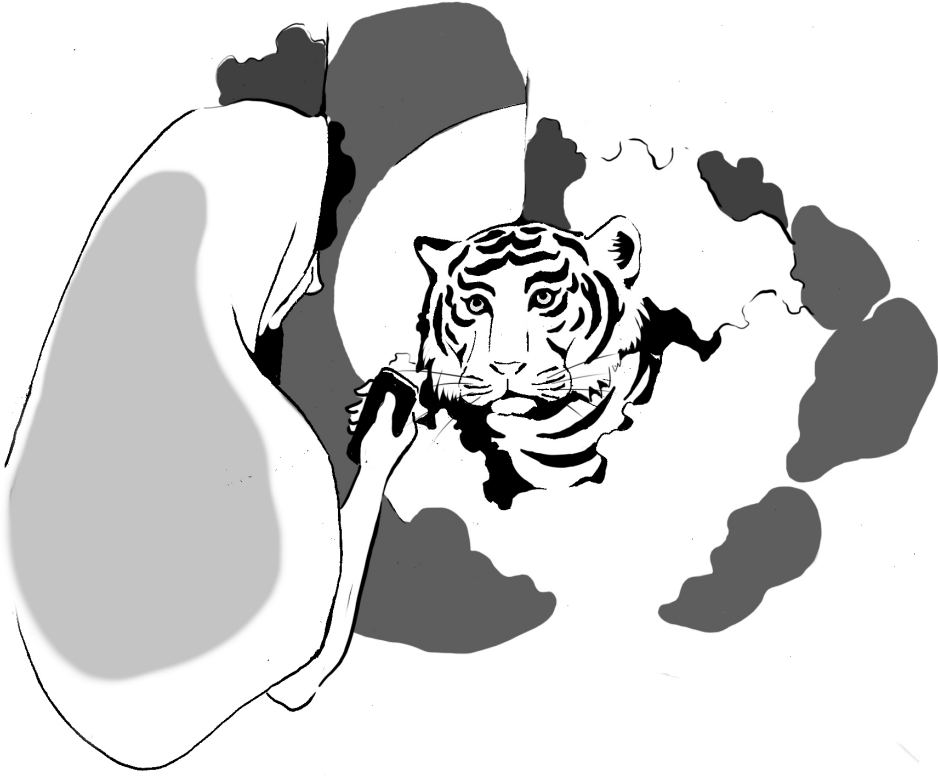


एक अँधेरी श्याम, गोनी बाई अपने साथ जानका बाई और छोटू को लेकर पन्ना से अपने घर के और चली जा रही थी। तीनों ने अपना पूरा दिन एक टीबी मरीज के साथ उनकी नियमित जांच में बिताया था।

जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, शाम घने अंधेरे में गहराती गई। गोनी बाई ने अपने फोन की टॉर्च को चालू करके उनका रास्ता रोशन किया। उन्हें क्या पता था कि उनके रास्ते पर पड़ने वाली यह साधारण टॉर्च की रोशनी एक ऐसे दृश्य पर चमकेगी जो उन्हें बयां करने के लिए अनेक कहानियों में शामिल हो जाएगी।

उस नाजुक रोशनी में, पेड़ों की छाया में, दों चमकीली आंखें थी। जानका बाई ने अपने बेटे को पुकारा, "छोटू, बाघ!"

"कहाँ??"



उन्होंने टोर्च की रोशनी उनसे दो-तीन कदम दूर बैठे हुए बाघ की दिशा में घुमाई। छोटू को एहसास हुआ कि सचमुच वहाँ बाघ है, उसी में उसने जबान दबाकर कहा , “भागो!”

गोनी बाई ने दृढ़ता से छोटू को समझाया कि भागने से बाघ भड़क सकता है और हमला कर सकता है। उस समय छोटू के अंदर डर से अधिक अन्य भावनायें दबी हुई थीं । बाघ को फिर से एक बार उचलती नजर देखते हुए उसने कहा कि वह कितना सुंदर लग रहा है और उसे उस पर बैठकर खेलने की तीव्र इच्छा हो रही है।



गोनी बाई और जानका बाई ने अपनी हंसी दबा ली और चुपचाप छोटू को बाघ से दूर हटाकर ले गई। इस तरह, रात के अंधेरे में, वे उस शाम बाघ के अचानक आगमन की कहानी सुनाते चले गईं। इसी तरह यहाँ अचानक भेट उमरावन के लोगों द्वारा सुनाई जाने वाली कई कहानियों में से एक कहानी बन गई।

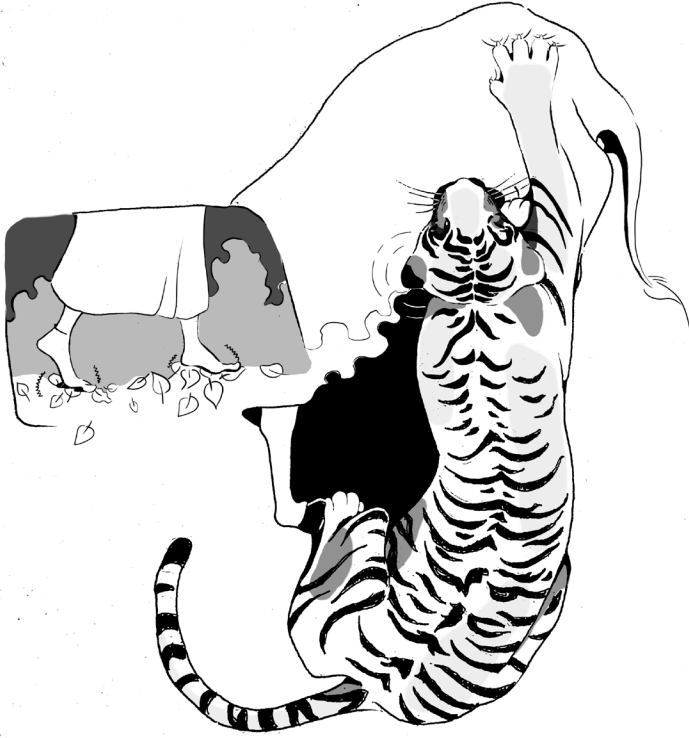
वह हमारे लिए खतरा है जैस की हम उसके लिए



बदोर गांव की फगुनिया बाई को अपने जीवन में दो बार बाघों का सामना करना पड़ा है। पहली बार जिस रास्ते पर वह चल रही थी, उसके बगल में एक बाघ दिखाई दिया। बाघ ने एक बैल को अपना शिकार बना लिया था, और फगुनिया बाई अज्ञात थी कि वह और शिकार की तलाश में है या नहीं।



फगुनिया बाई एक पल के लिए भयभीत हो गई और संदेह से जूझने लगी। जिस अकेले रास्ते पर वह हर रोज़ जाती थी, अब उस रस्ते का एक बाघ भी भागीदार था। उसे नहीं पता था कि उसे कहाँ जाना है, क्योंकि उसके पास सिर्फ़ यह एक ही रास्ता था जिससे वह जा सकती थी।



“अगर मैं भागूँगी, तो वह और तेज़ भागेगा। अगर वह मेरे दौड़ते कदमों की आवाज़ सुन लेगा, तो वह मुझ पर हमला कर देगा”, वह बचने का तरीका सोच रही थी।



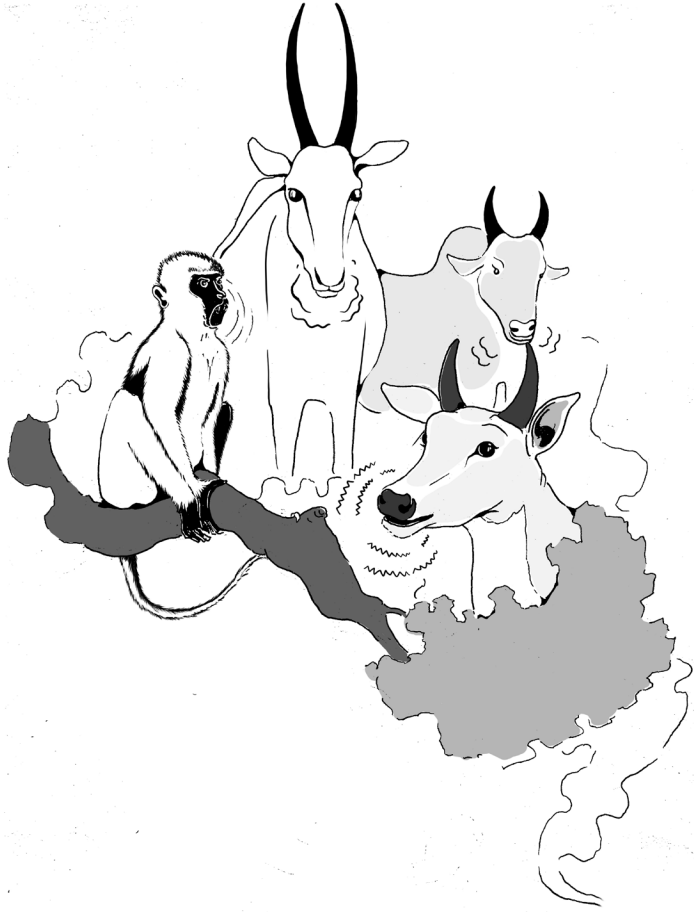
तनाव के बीच फगुनिया बाई अपनी सामान्य गति से चलने लगी और एक छोटा सा चक्कर लगाया, बाघ के साथ उन्होंने एक सुरक्षित अंतर बनाये रखा। जब वह चली गई, तो बाघ, उसके जाने से बेपरवाह बैठा रहा, उसकी निगाहें अपने हाल के शिकार के टुकड़ों पर टिकी रहीं।



सालों बाद, चैत (वसंत) के महीने में एक दिन फगुनिया बाई काम के लिए जंगल जा रही थी, तभी उन्होंने फिर से एक बाघ देखा। वह याद करती है की बाघ की उम्र लगभग पांच साल होगी, जहाँ वे लकड़ियाँ इकट्ठा कर रही थी, उसी के नजदीक बाघ आराम से बैठा हुआ था। इस घटना को याद करते हुए वह डर को भूल जाती है। 'वह हमारे लिए खतरा है, जैसे हम उसके लिए खतरा हैं' यह याद करते हुए, वह दूर चली गई और बाघ फिर से वहीं बेफिक्र बैठा रहा।



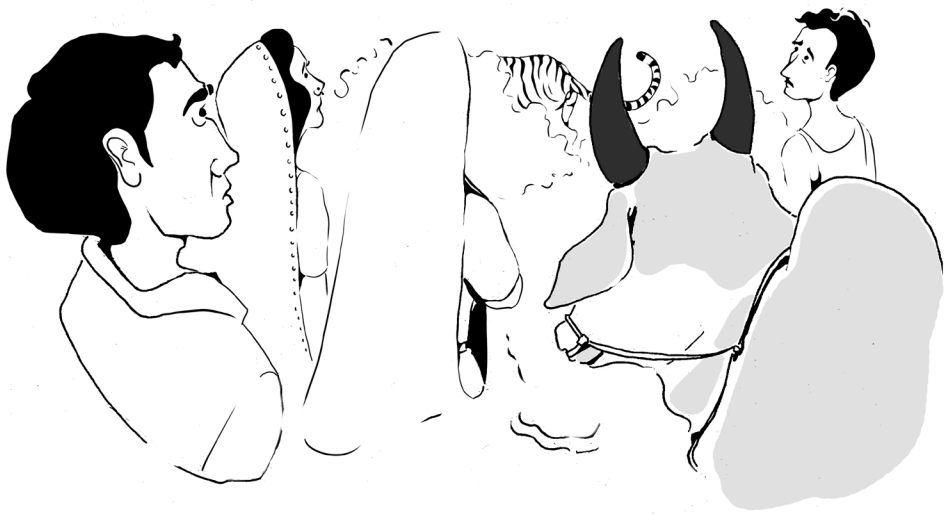
## नेकी की लहर



बंदर, नीलगाय, सांभर, बैल की विशिष्ट आवाज़ें बाघ की मौजूदगी के अच्छे संकेतक हैं। उमरावन गांव की गोनी बाई ने एक बार हमें सिखाया कि खरगोशों की उकतानेवाली चीखें भी गाँव वालों को बाघ के आने की चेतावनी देने में भूमिका निभाती हैं।



एक सुबह, जब मुन्नी बाई महुआ के पत्ते लपेट रही थी, तब उन्हें उन ध्वनियों के संयोजन का तीव्र अहसास हुआ।



उन्होंने आस-पास काम कर रहे सभी लोगों को बाघ के मौजूदगी की सम्भावना सूचित की, और वे सभी बाघ की उपस्थिति का गवाह बनने के लिए इकट्ठा हो गए, और वह छाया में फुर्सत से लौट गया।



एक और सुबह, जब मुन्नी बाई अपनी बेटी के साथ तालाब पर थी, तो उनकी बेटी ने पानी में एक बाघ को देखा। बच्ची के चीख से उकसाये या अप्रत्याशित, बाघ बिना अपनी प्यास बुझाए, पानी की लहरों को पीछे छोड़ते हुए सलीके से चला गया, वह मुन्नी बाई और उनकी बेटी तक पहुँची। उन्होंने सुनिश्चित किया कि ये लहरें इस मुठभेड़ की कहानियों के माध्यम से गाँव वालों तक भी पहुँचें, और मोहलत से नहा-धोकर ही तालाब से बाहर निकलें।



## हाऊऊऊ - मैं इनाम से चूक गई !



“हाऊऊऊ,” कमला बाई की आवाज़ गुंजती है, वह बाघ के उस दहाड़ की नक़ल करती है जिसका सामना उन्होंने काम से लौटते समय किया था। उन्हें याद है कि उन्होंने दूर से एक आकृति देखी थी, और सहज ही समझ गई थी कि यह बाघ ही होगा।



जब उनके आस-पास के लोगों ने पुष्टि की कि यह बाघ है, तो उन्हें याद है कि उनका दिल धड़क उठा था। असरानी और आसाराम काम से लौटते हुए उसी रास्ते से वापस जा रहे थे। कमला बाई पगडंडी के बीच में खड़ी रही और उन्हें चेतावनी दे कि दूर एक बाघ छिपा हुआ है, जो अपने भोजन के लिए जंगली सूअर को घसीट कर ले आया है।



“कहाँ? कहाँ? क्या हम जाकर देख सकते हैं? चलो चलें!”

उनका जवाब तुरंत था। कमला बाई, हालांकि अभी भी डरी हुई थी, लेकिन उन्हें उनकी संगति में थोड़ा आराम मिला।







फिर उन्होंने मज़ाक में अपने सहेलियों से कहा, 'आज का भोजन हमारे सामने है – चलो हम अपना जलाऊ लकड़ियाँ इकट्ठा करने चलें, और जब बाघ चला जाए, तो क्यों न हम सूअर को उठाकर सबके लिए पका दें।' जब उन्होंने अपनी गठरियाँ समेट लीं, तो वे यह देखने के लिए चल पड़े कि बाघ अभी भी वहाँ है या नहीं।



जब वे वापस उस जगह पर पहुंचे तो बाघ वाकई वहां था और उन्होंने उसे करीब से देखने का साहस किया। पहली बार अपने सामने बाघ का पूर्ण रूप देखकर कमलाबाई को कोई विशेष आश्चर्य नहीं हुआ। लेकिन वह इस अनुभव के बारे में इस तरह उत्साह से बात करती है जैसे कि यह अनुभव बाघ से भी बड़ा हो। फिर वह कहती हैं, 'घर लौटने पर साहब'। हमसे पूछने आए कि क्या हमने वाकई बाघ देखा है, जिस पर मैंने कहा, 'हाऊ?'

- 
- 1 वन रक्षक
  - 2 हाँ!



तभी साहब ने, थोड़ी देर से ही सही, यह खुलासा किया कि अगर उन्होंने बाघ दिखने की सूचना तुरंत दे दी होती, तो उन्हें तीन लाख रुपए मिल सकते थे। सालों बाद, कमला बाई इस बात को याद करके हंसती हैं और मज़ाक में कहती हैं कि यह जानकारी बाघ दिखने से भी ज़्यादा चौकाने वाली थी!

## मौत की गंध – आज मेरी मुलाक़ात हुई एक जानवर से – एक बाघ से

बाघ की गंध कैसी होती है?

कुछ लोग कहते हैं, 'मौत'; कुछ कहते हैं, 'खतरा'।

लेकिन उमरावन की जानका बाई को जंगल में जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने जाते समय बाघ से हुई पहली मुठभेड़ में इनमें से कोई भी गंध महसूस नहीं किया। उस दिन जलाऊ लकड़ी इकट्ठा नहीं कर पाने से भोजन पकाने में होनेवाले मुश्किलों की संभावना में उसके लिए खतरे की अधिक गंध थी।



दोपहर करीब 2 बजे, जानका बाई अपने घर से तीन किलोमीटर दूर जंगल की ओर अपनी नियमित सैर के लिए निकली। रास्ते में उन्हें सड़ी हुई गंध पाई और उन्होंने अंदाजा लगाया कि पास में कोई जानवर है। एक विशाल पेड़ के नीचे उन्होंने एक बाघ को अपने पंजे फैलाए बैठे देखा। उन्होंने बाघ के साथ नज़रें मिलाई, चुपचाप और धीरे-धीरे चलते हुए, अपनी लकड़ियां इकट्ठा करना जारी रखा। जब उनका काम पूरा हो गया, तो वह कुछ मिनटों के लिए बाघ पर अपनी निगाहें जमाए खड़ी रही। अपनी स्मृति में इसकी मौजूदगी को समाहित करते हुए, उन्होंने अपनी लकड़ियों को एक साथ बांधा और घर वापस जाने के लिए चल पड़ी। रास्ते में, वह बाघ की उम्र के बारे में सोचती रही और यह भी कि वह किस जानवर का शिकार कर रहा होगा, जिससे यह सड़ी हुई आ रही होगी।



उनके निकटतम अनुमान से उन्होंने निष्कर्ष किया की यह उस उम्र के आसपास होना चाहिए जब बच्चा यौवन प्राप्त करता है। गांववालों ने न केवल उनसे बाघ के बारे में सुना (आज मैं एक जानवर से मिला। एक बाघ!) बल्कि रात में बाघ से भी सुना। उन्होंने अगली सुबह कथित किया कि उन्होंने रात में बाघ की संभाषण करने की आवाज़ सुनी; वह कुछ कहना चाहता था।

उन चंद मिनटों तक बाघ को बिना किसी परेशानी के देखने से उन दोनों के बीच एक परिचयात्मक रिश्ता बन गया था। वह उसे जानने लगी थी। वह सोच रही थी कि अगर वे दोनों एक ही भाषा बोलते तो वह और क्या जान पाती। क्या वह उन्हें अपने परिवार के बारे में बताता? क्या वह उनसे कहता कि वह उसे अकेला छोड़ दे?

अभी के लिए, उन्होंने अपने काम से काम रखने के लिए पर्याप्त बातचीत की - जानका बाई के लिए एक आकर्षक व्याकुलता के साथ अपनी जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने के लिए, और बाघ के लिए शांति से अपना भोजन पचाने के लिए - जीवित रहने और सह-अस्तित्व के लिए एक दूसरे की आवश्यकता का गवाह बन गए।

## गोनी बाई की त्रासदी



करीब 3-4 साल पहले गोनी बाई अपने घर से करीब 2 किलोमीटर दूर बकरी चरा रही थी, उस समय उनका सामना एक तेंदुए से हुआ।

तेंदुआ शिकार की तलाश में था और उसकी नज़र उनके बकरी पर थी।



जैसे ही वह बकरी को ले जाने के लिए दौड़ा, गोनी बाई और अन्य लोगों ने जोरदार चीख-पुकार मचाई, जिससे तेंदुए की योजना विफल हो गई।

अचानक हुए शोर से चौंकर और विचलित होकर, तेंदुए को बकरी पर से अपनी पकड़ छुड़ाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

शोर-शराबा अपने उद्देश्य को पूरा कर चुका था - गोनी बाई ने अन्य लोगों के साथ मिलकर तेंदुए के शिकार को सफलतापूर्वक विफल कर दिया था। तत्काल खतरा टल जाने पर, गोनी बाई ने कोई समय बर्बाद नहीं किया। उन्होंने जल्दी से अपना झुंड इकट्ठा किया और घर की ओर भागी, हवा में राहत और तनाव के मिश्र भाव मंडरा रहे थे।



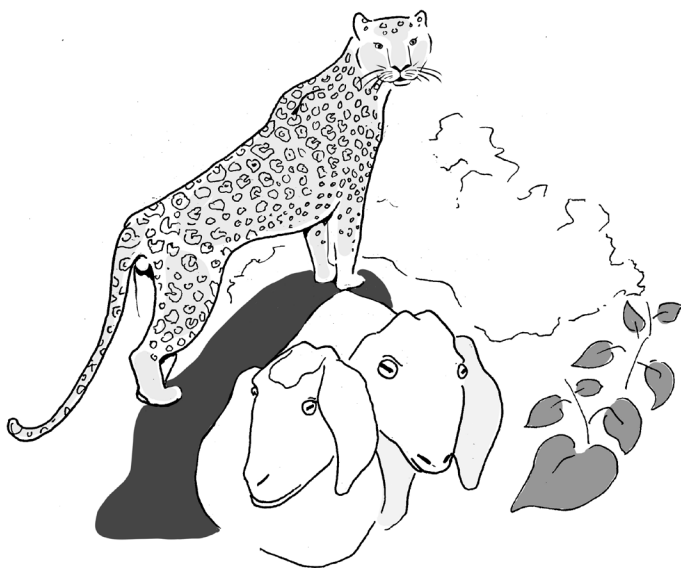
तेंदुए के हमले से बकरी बुरी तरह घायल हो गई, गोनी बाई ने उसकी देखभाल करने की बहुत कोशिश की, ताकि वह वापस स्वस्थ हो जाए। अफ़सोस कुछ दिनों बाद बेचारी बकरी मर गई।





यहाँ कुछ नुकसान हैं जिसे गोनी बाई के पड़ोसियों और दोस्तों को कोविड के दौरान उठाना पड़ा, उसके लिए उन्हें बहुत कम या कोई मुआवजा नहीं मिला है:

गाँव	मवेशियों की मृत्यु	गाँव	मवेशियों की मृत्यु
कैमासन	गायें -13 (3 बाघ, 10 तेंदुए); बकरियां -10 (तेंदुआ); बैल -1 (तेंदुआ)	बड़ोर	गायें -17 (7 बाघ, 10 तेंदुए); बकरियां - 14 (तेंदुआ); भैंस - 2 (बाघ)
उमरावन	गायें - 6 (2 बाघ, 4 तेंदुए); बकरियां - 3 (तेंदुआ); भैंस - 1 (बाघ)	दरेरा	गायें - 8 (3 बाघ, 5 तेंदुए); बकरियां - 13 (तेंदुआ); भैंस - 1 (बाघ)
मडैयन	गायें - 3 (2 बाघ, 1 तेंदुआ); बकरियाँ - 12 (तेंदुआ)	Manor	



## महुआ के बीच बाघ से मुलाकात



गर्मियों के दौरान, उमरावन के लोगों के लिए काम का समय सुबह छह बजे से शुरू हो जाता है। एक भी दिन छूट नहीं सकता - यह अचार महुआ' इकट्ठा करने का मौसम होता है और मौसम के प्रतिकूल होने से पहले ज्यादा से ज्यादा संग्रह करना होता है। कभी-कभी मौसम इतना अचानक और प्रतिकूल (विपरीत) हो जाता है कि एक किलो महुआ के फूल भी तोड़ना मुश्किल हो जाता है।

---

1 एनटीएफपी: गैर लकड़ी वन उपज

आज सुबह, परिस्थितियाँ उनके अनुकूल थीं और हमारे लोग अपने दैनिक संग्रह के लिए जंगल में निकल पड़े। जंगल में तालाब के पास जहाँ वे आराम करते हैं, हाथ-मुंह धोते हैं और पानी पीते हैं, एक बाघ लेटा हुआ था, उसकी आँखें चौड़ी खुली हुई थीं, उसकी चंचल निगाहों में उनकी दिनचर्या को बाधित करने की क्षमता थी। जानका बाई सुबह महुआ इकट्ठा करने के बाद, वापस लौटते समय शाम के महुआ इकट्ठा करने के काम की योजना बनाने में समय बिताती थी, मौसम के बारे में सोचती थी, हिसाब लगाती थी कि आज के लिए और कितना महुआ इकट्ठा करना है और उसके लिए उन्हें कितने घंटे और मिलेंगे। उनकी योजना को बाधित करते हुए, उनके देवर ने किसी चीज़ की ओर तत्परता से इशारा किया। जब जानका बाई की नज़र उसके हाथ की दिशा में गई, तो उन्हें तालाब का छोर दिखाई दिया, जहाँ बाघ सुस्ती से बैठा था। बाघ ने उनकी नज़र को भांप लिया, और जब उनकी नज़रें एक दुसरे से मिलीं, तो वह चुपचाप उठ गया और उसने एक पेड़ के नीचे बैठने के लिए एक नई जगह ढूँढ़ ली। क्योंकि बाघ भी जानता है कि हमें महुआ की ज़रूरत है और शायद, उस दिन उसे किसी के साथ की ज़रूरत रही होगी।



जानका बाई और उनके देवर घर की ओर वापस चलते रहे- वही रास्ता जिस पर वे शाम को वापस आने वाले थे। वे जंगल से वापस आने वाले लोगों को तालाब के आसपास बाघ की मौजूदगी के बारे में चेतावनी देने के लिए रुकते रहे। मौसम उनके पक्ष में था, और बाघ भी, और उन्हें बस यही चाहिए था। जानका बाई ने अपनी दिन भर अपनी योजनाएँ बनाना जारी रखा जैसे बाघ ने भी अपनी योजनाएँ जारी रखीं।

## अब सांस लो... दादी की सीख

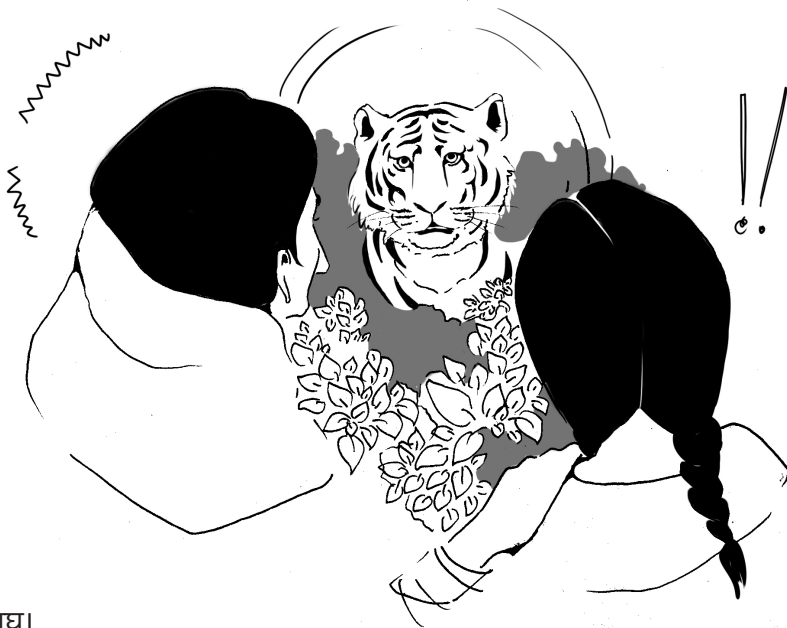
गर्मियों में महुआ इकट्ठा करने का मौसम जारी रहा, इसलिए पूरा मडैयन गांव इसके फूलों को इकट्ठा करने, संरक्षित करने और बेचने के काम में व्यस्त हो गया। इकट्ठा किए गए फूलों में से कुछ का इस्तेमाल कई तरह के घरेलू और औषधीय उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जबकि बाकी को पन्ना ले जाया जाता है और ठेकेदार को बेच दिया जाता है। सूरज बाई (उम्र 75) हर सुबह अपनी पोती (उम्र 17-18) के साथ जंगल जाती हैं। सूरज बाई, जिन्हें उनके आस-पास के लोग प्यार से दिलगु बहू कहते हैं, एक विधवा हैं जो कई तरह से अपनी आजीविका चलाती हैं, जिनमें से कुछ जंगल से अचार महुआ इकट्ठा करने पर निर्भर हैं।



एक दोपहर जब जंगल से लौटने का समय हुआ, तो उनके पोती को सतर्कता बरतने की ज़रूरत महसूस हुई। क्या होगा अगर कोई बैल आकर उनका अचार महुआ खा गया? उनकी पूरी दिन की मेहनत बेकार चली जाएगी। अगर यह सब बर्बाद हो गया तो उसकी अम्मा क्या बेचेगी?

इससे पहले कि कोई बैल उन्हें देख ले, उसने तुरंत अपनी अम्मा को सलाह दी कि वे महुआ के फूलों को एक साथ बांध लें। इस संभाव्य खतरे को टालने के लिए, उन्होंने जो कुछ भी इकट्ठा किया था उसे संरक्षित करने में वह व्यस्त हो गये। अचानक, दादी और नाती दोनों एक विपुल उपस्थिति से बाधित हो गए।

वे मुड़े।



एक बाघ।

नज़रें मिली।

एक दूसरे से। बाघ से।

तीनों हैरत में खड़े थे। साँस फूल रही थी। एक दूसरे की अगली चाल का अंदाज़ा लगा रहे थे।

उस दिन जंगल में बहुत से लोग थे। शायद सूरज बाई मदद के लिए पुकार सके।

नहीं, हिलना मत। चिल्लाना मत।

पहले सुनी गई कहानियों से मिले सारे सबक उनको याद आये। वह उन्हें अपने मन में दोहराती रही।

तुम्हें बाघ से मिली नज़रें नहीं हटानी चाहिए। उसे शक हो जाएगा कि कुछ गड़बड़ है।

बाधा होने के बावजूद, वह उसकी आँखों में देखती रही। उनकी पोती ने भी वह अनुकरण किया ।

धीरे-धीरे पीछे हटो।



उनके पैर की हल्की सी हरकत से उनकी पोती को आगे चल का संकेत मिल गया; और उन्होंने एक छोटा, धीमा कदम पीछे ले लिया।

इससे पहले कि वे अपना अगला कदम तय कर पाते, बाघ ने दूसरी ओर देखा, जिससे उन्हें आखिरकार बाघ के आँखों से अपनी नज़र हटाने का मौका मिला। लड़की ने पहले बाघ को एक बार ध्यान से देखा - उसके शल्क, खाल और फर को बारीकी से देखा, जो उसके साँस लेते समय हिल रहे थे। फिर उसने अपनी अम्मा की ओर भय और संदेह से भरी आँखों से देखा। उन्हें सबसे बुरे हालात के लिए तैयार रहना था।

लेकिन बाघ की तो कुछ और ही योजना थी।

एक बार जब उसने नज़रें फेर लीं, तो फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

धीरे-धीरे वह आगे बढ़ा और इससे पहले कि लोग समझ पाते, वह अपने रास्ते पर चल पड़ा।



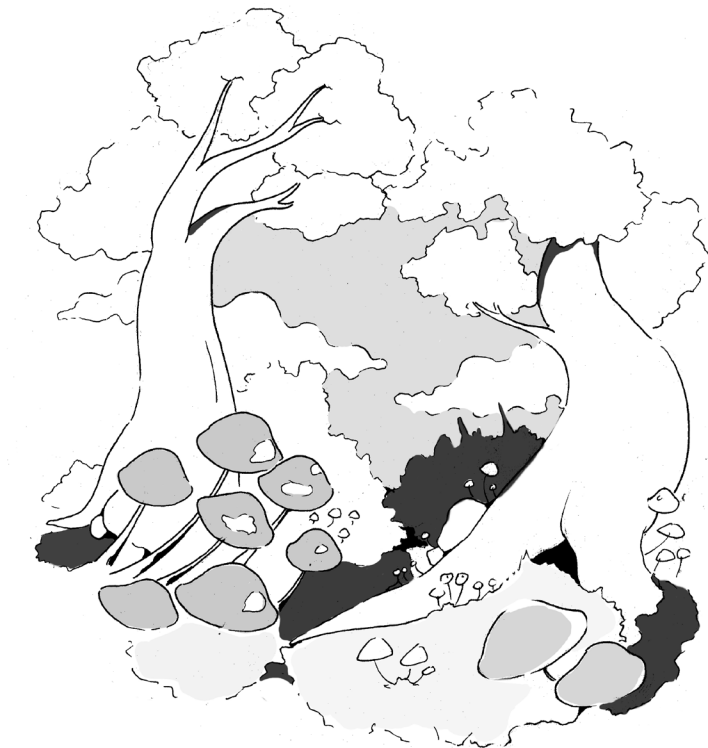
अब साँस लो।

अपनी साँस पूरी करने से पहले, लड़की ने सोचा, “लेकिन अचार महुआ का क्या?”

उसकी राहत के लिए, दिन भर का उनका संग्रह अभी भी बरकरार था। लेकिन अब वह जानती थी, हर पल खतरा पैदा हो सकता है - खतरा जो शायद उनकी आशंका से भी बदतर था।

उसने बचे हुए महुआ के फूल उठाए, और सूरज बाई ने उन्हें अपनी टोकरी में रखना शुरू कर दिया। उन्हें इसे खत्म करना था और फिर से शाम को अपने संग्रह के लिए समय पर वापस आना था।

## मानसून और मशरूम - बाघ भी इन्हें पसंद करते हैं



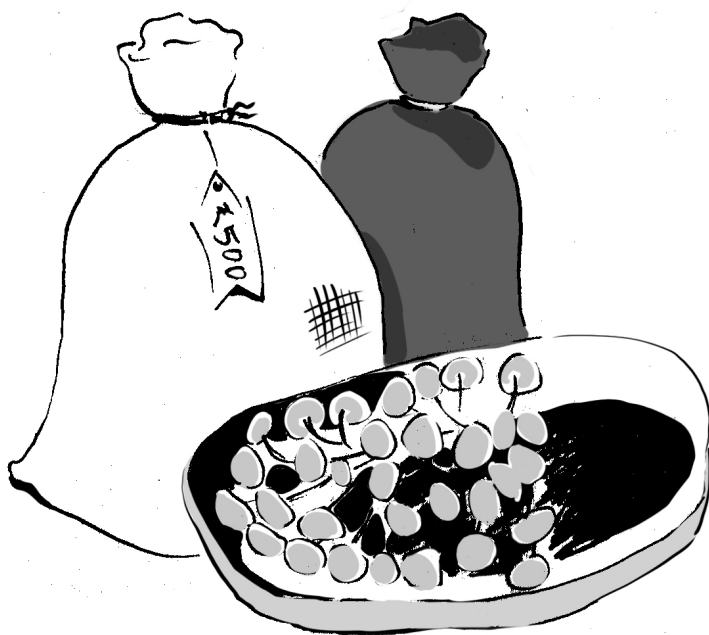
“जब थोड़ी ज्यादा बारिश होती है, लपकते गरजते है बादल....”

मानसून की बरसात, गरजने की आवाज़ और उसके बाद आने वाली मिट्टी की खुशबू, ये सब उमरावन की महिलाओं को मशरूम के उगने और जंगल से उन्हें इकट्ठा करने के उत्साह की याद दिलाते हैं। जानका बाई हमें बताती हैं कि ये मशरूम गहरे जंगल के अंदर पाए जाते हैं - कम से कम छह से सात किलोमीटर दूर। जंगल में इन जानी-मानी जगहों के आस-पास, ऐसी ही बारिश के दिन, जहाँ महिलाएँ मशरूम इकट्ठा करती हैं, जानका बाई ने अपनेआप को बारिश का आनंद लेते हुए एक परिवार के साथ पाया।





एक बाघ अपने दो बच्चों के साथ एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ था, और उसके पिल्ले इधर-उधर दौड़ रहे और खेल रहे थे। जानका बाई और अन्य लोगों ने उन्हें प्रसन्नता और आश्चर्य के साथ देखा, और सतर्कता से भी – पेड़ों के सहारे छिपकर और झाँककर, उन्होंने बारिश में मग्न परिवार को अच्छी तरह से देखा और फिर मशरूम ढूँढ़ने और इकट्ठा करने के लिए आगे बढ़े। जंगल ने जानका बाई और अन्य परिवारों का स्वागत किया, ताकि वे बाघ परिवार के साथ अभी-अभी गुजरे मानसून के आनंद को साझा कर सकें। बाघ के क्षेत्र को बिना किसी बाधा के छोड़ने के बावजूद, वे बड़े-बड़े मशरूम से भरे बोरे इकट्ठा करने में सफल रहे, उन्हें सावधानी से पैक किया और पन्ना शहर में ₹500 प्रति बोरे के दाम पर बेच दिया।





## तेंदुए को कैसे डराएँ?

एक बार, जब जनका बाई कुछ अन्य महिलाओं के साथ जंगल में लकड़ियाँ इकट्ठा करने गई थी, तो अचानक एक तेंदुआ पेड़ों से चुपचाप निकलता हुआ दिखाई दिया।

जनका बाई याद करते हैं, “उसने हमें देखा, हमने उसे देखा और हम डर गए।” महिलाएं एक पल के लिए स्तब्ध रह गईं, उनके दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं। जब तेंदुए उन्हें देखा, उसकी आंखें चमक उठी।

स्वाभाविक प्रतिकार से, महिलाओं ने चिल्लाना शुरू कर दिया, जानबूझकर जितना संभव हो सके उतना शोर मचाया। अचानक हुई हलचल से तेंदुआ चौंक गया। उसके कान फड़कने लगे, और वह खतरे के बारे में अनिश्चित होकर इधर-उधर देखने लगा।

डरकर वह धीरे से पीछे हटा, फिर मुड़कर जंगल में चला गया, और जिस तरह से चुपचाप आया था, उसी तरह से वह गायब हो गया।

औरतें साँस रोककर इंतज़ार करती रहीं, जब तक कि उन्हें यकीन नहीं हो गया कि वह चला गया है। फिर, उन्होंने जल्दी से अपनी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और गाँव की ओर चल पड़ीं, हर कदम पर अपनी मुठभेड़ की कहानी साझा करती रहीं।



एक बार जब जानका बाई अपनी बकरी चराने जंगल में गई। उसने देखा कि एक तेंदुआ उनकी ओर आ रहा है और इससे पहले कि वह कुछ कर पाती, उसने बकरी पर झपट्टा मारा और बकरी को लेकर भाग गया।

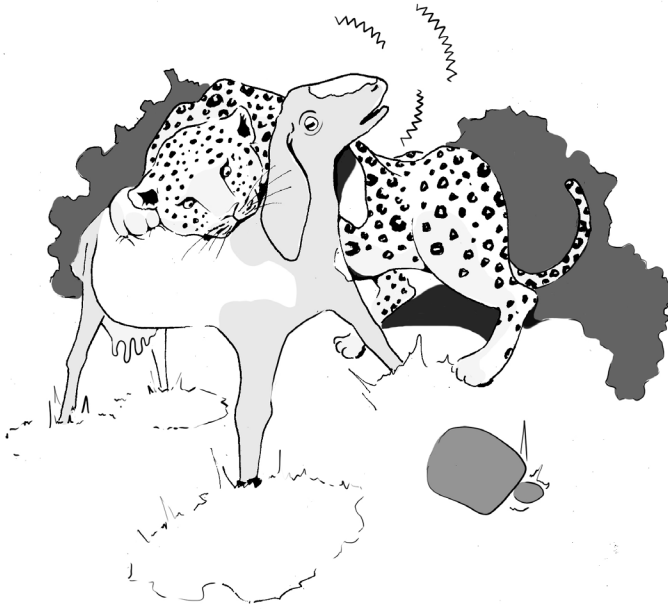


शाम को जब वह वापस लौटी तो लोगों ने सहानुभूति जताते हुए कहा कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। पहले अगर कोई जानवर आपके पशुओं को ले जाता था तो कम से कम मुआवजा तो मिलता था। अब यह बंद हो गया है। वन्यजीवों के हमले बढ़ने के साथ ही नुकसान और शोक भी बढ़ रहा है। जंगल कम होते जा रहे हैं और निर्माण कार्य में तेजी आ रही है क्योंकि पर्यटक बाघ और तेंदुए को देखने के लिए आ रहे हैं। लेकिन बाघों, तेंदुओं, बकरियों और आदिवासियों के लिए जीवन कठिन होता जा रहा है।



कुछ सप्ताह बाद, जानका बाई ने खुद को एक बार फिर जंगल में पाया, इस बार अपनी प्यारी बकरी के साथ। वह अक्सर अपनी बकरी को हरे-भरे घास के मैदानों में चराने ले जाती थी, जहाँ घास ताज़ी और भरपूर थी। दिन सुकून भरा था, हवा बकरियों की कोमल मिमियाहट और पत्तों की सरसराहट से भरी हुई थी।

बकरी जब संतुष्ट होकर चर रही थी, तो जानका बाई उस पर नज़र रखे हुए थी, उनकी इंद्रियाँ जंगल की लय के साथ तालमेल बिठाए हुए थीं। अचानक झाड़ियों में सरसराहट ने उनका ध्यान खींचा। वह पलटी, उनकी साँस गले में अटक रही थी। एक तेंदुआ, जो पहले वाले से भी बड़ा था, पत्तियों के बीच से निकला। उसकी नज़रें उनकी बकरी पर टिकी थीं।



जनका बाई में दहशत फैल गई। इससे पहले कि वह कुछ कर पाती, तेंदुआ झपट्टा मारकर बकरी की ओर बढ़ गया। शिकारी के पंजे बकरी में धंस गए और बकरी ने डरकर चीखना शुरू कर दिया। तेज, क्रूर हरकत के साथ तेंदुआ बकरी को पकड़कर जंगल में गायब हो गया। जानका बाई की प्यारी छोटी बकरी गायब हो गई, जिसकी वजह से जानकाबाई को अपनी दैनिक मजदूरी से जमा की गई सारी बचत गंवानी पड़ी।



जनकाबाई वहीं खड़ी रह गई, उनका दिल चकनाचूर हो गया। उनकी आंखों में आंसू बहते रहे और वह गांव की ओर लौटती रही, उनके कंधों पर अपने नुकसान का बोझ भारी था। उस शाम, उन्होंने अपना दुख गांव वालों के साथ साझा किया। गांव के लोग उनके चारों ओर इकट्ठा हो गए, उनके नुकसान को साझा किया।

“एक समय था जब हमें ऐसे नुकसान के लिए मुआवजा मिलता था,” एक बुजुर्ग ने फिर से अपना सिर हिलाते हुए कहा। “लेकिन वो दिन चले गए। अब, हमें इन कठिनाइयों को अकेले ही झेलना होगा।



## भालू से मुठभेड़ – बमुश्किल मज़ेदार

“एक दिन सुबह हम जंगल जा रहे थे फ्रेश होने...”

जनका बाई, महिलाओं के एक समूह के साथ, एक सुबह जल्दी जंगल में निकल पड़ी, जो शौचालय जाने और वापस लौटते समय जलाऊ लकड़ी लाने की उनकी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा था। जंगल परिचित था, हलाकि हमेशा अनिश्चितता का भाव रखता था।



जैसे ही वे जंगल में दाखिल हुए, अचानक एक सरसराहट की आवाज़ ने जानका बाई का ध्यान खींचा। वह रुक गई, उनका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। पेड़ों के बीच से, उन्होंने एक बड़े भालू को देखा, उनका फर एक गहरा, झबरा कोट था जो छाया में घुल-मिल गया था। भालू अपनी ही गतिविधि में तल्लीन था, अपने शक्तिशाली पंजों का उपयोग करके चींटियों के भोजन की तलाश में एक चींटी के टीले को खोद रहा था।

जनका बाई की नब्ब तेज हो गई। भालू अप्रत्याशित माने जाते हैं, और उन्हें भालुओं के लिए हमेशा से गहरा डर था। उन्होंने दूसरी महिलाओं को संकेत किया, चुपचाप भालू की ओर इशारा किया। उन्होंने एक-दूसरे पर चिंतित नज़रें डालीं और सावधानी की ज़रूरत को समझा।



बिना कुछ कहे, समूह ने दिशा बदल दी, और भालू के रास्ते से बचने के लिए जंगल में आगे बढ़ गए। जंगल गहरा था और झाड़ियाँ घनी थीं, लेकिन वे आगे बढ़ते रहे, किसी भी संभावित खतरे से बचने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। भालू की खोजबीन की आवाज़ अभी भी सुनाई दे रही थी, जो उसकी उपस्थिति का निरंतर स्मरण थी, लेकिन वह व्यस्त था, ऐसा लग रहा था कि उसे आस-पास की महिलाओं का कोई पता नहीं था।

भालू के व्यवहार में किसी भी तरह के बदलाव पर ध्यान रखते हुए, महिलाओं ने अपना काम जारी रखा। उन्होंने जल्दी से एक उपयुक्त स्थान ढूँढ़ लिया और अपनी ज़रूरतों को साँझा के बाद, जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करना शुरू कर दिया। उनके हाथों के नीचे शाखाओं के टूटने की लयबद्ध आवाज़ और कभी-कभी फुसफुसाती बातचीत हवा में भर गई।



हालाँकि उनकी शुरुआती मुठभेड़ तनावपूर्ण थी, लेकिन भालू अपनी ही दुनिया में संतुष्ट लग रहा था, उसका पूरा ध्यान चींटियों के शिकार पर था। वह धीमी, सोची-समझी शालीनता के साथ आगे बढ़ रहा था, पूरी तरह से अपनी गतिविधि में लीन था। महिलाओं को भी एक लय मिल गई, क्योंकि भालू ने आक्रामकता के कोई संकेत नहीं दिखाए, उनकी घबराहट कम हो गई।

जलाऊ लकड़ी के गट्टर इकट्ठा करके, समूह ने गाँव की ओर वापस चलने लगे। भालू की उपस्थिति उनके दिमाग में घूम रही थी, जो जंगल के हमेशा मौजूद जोखिमों की याद दिलाती थी। फिर भी, राहत की भावना भी थी। वे मुठभेड़ से बिना किसी हानि के बचने में कामयाब रहे, हर कदम उन्हें उनके घरों की सुरक्षा के करीब ले जा रहा था।

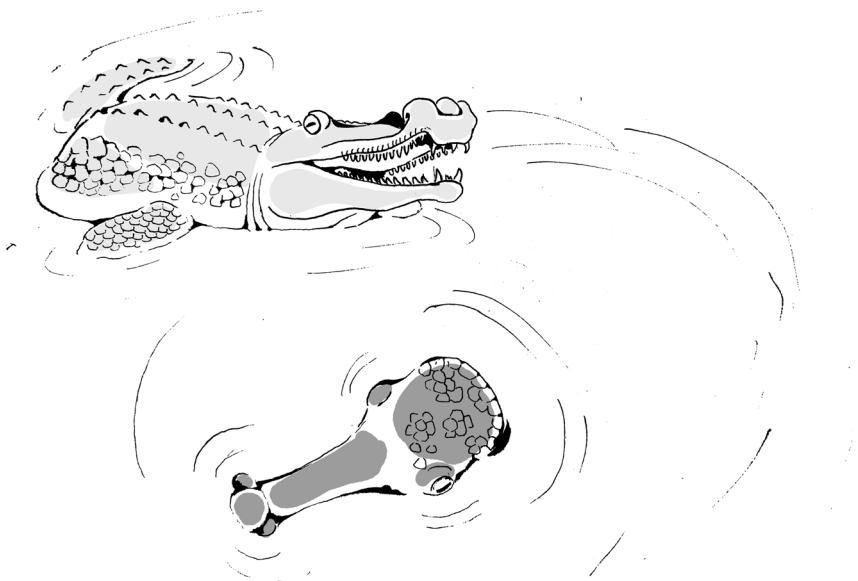
जैसे-जैसे वे चलते गए, जनका बाई को मिश्रित भावनाओं का अनुभव हुआ। उनके दिल में जो डर था, वह धीरे-धीरे शांत हो गया। जंगल, अपने सभी खतरों और अनिश्चितताओं के बावजूद, अभी भी एक नियमित और ज़रूरी स्थल थी।

## धर्मेन्द्र, पर्यटक गाइड, बता रहे हैं सफारी की कहानियां

धर्मेन्द्र पिछले छह सालों से पन्ना टाइगर रिजर्व में लोगों को सफारी के लिए ले जा रहे हैं। वे बताते हैं कि यह सफारी साल में नौ महीने चलती है और देश-दुनिया से पर्यटक यहां आते हैं। कुछ लोग बाघ देखने आते हैं, कुछ पक्षी देखने आते हैं, तो कुछ सिर्फ जंगल देखने आते हैं। पर्यटक जंगल से जो चयनात्मक अनुभव चाहते हैं, उसके आधार पर वह अपना दौरा तैयार करते हैं - जिसमें वे दिखाते हैं कि अब टाइगर रिजर्व में घूमने के लिए कौन-कौन सी जगहें मुख्य हो गई हैं।



एक गिद्ध प्वाइंट है, एक मगरमच्छ प्वाइंट है और उसके बाद पीपाटोला गाव है, जो राष्ट्रीय उद्यान के लिए आदिवासियों को भगाए जाने से पहले एक बस्ती हुआ करती थी, और अब पर्यटन मानचित्र पर एक बिंदु मात्र बनकर रह गई है।



कुछ लोग सिर्फ बाघ देखने आते हैं, इसलिए आदिवासी अस्तित्व के ये सारे पहलू उनके लिए अप्रासंगिक हो रहे हैं। गिद्ध और मगरमच्छ की तरह यह बताना आसान नहीं है कि बाघ कब और कहाँ दिखाई देगा। लेकिन धर्मेन्द्र ने अपना रास्ता खोज लिया है।



## सुशीला दीदी



यह सर्दियों की एक ठंडी शाम थी जब सुशीला दीदी, उनके भाई और उनके दो बच्चे उमरावन में अपने ससुराल से कैमासन के लिए एक दोपहिया वाहन पर जंगल के बीच से गुजरने वाली ऊबड़-खाबड़, कच्ची सड़क पर निकले।

सड़क जानी-पहचानी थी, लेकिन उसमें अप्रत्याशितता का भाव था। वन्यजीवों से मुठभेड़ की कहानियाँ आम थीं, और हर छाया में कोई रहस्य छिपा हुआ लगता था। जैसे ही वे सड़क के मोड़ के पास पहुँचे, एक वाहन की आवाज़ ने उनका ध्यान खींचा। यह एक जीप थी, जो जंगल सफारी टीम की थी, जो अपने दिन के काम से लौट रही थी।

सफारी जीप उनके पास आकर रुकी और उसमें बैठे लोगों ने तत्काल इशारा किया। “आगे मत जाओ,” उनमें से एक आदमी ने आवाज़ लगाई। “पास में एक बाघ है। खुली गाड़ी में आगे बढ़ना सुरक्षित नहीं है।”

इस चेतावनी ने सुशीला दीदी के मन में चिंता की लहर दौड़ा दी। उनके भाई ने उन्हें चिंतित नज़रों से देखा और बच्चे तनाव को महसूस करते हुए और भी करीब आ गए। पुरुषों ने उस दिशा की ओर इशारा किया, जहाँ से वे अभी-अभी आए थे और वहाँ, बस कुछ दूर, बाघ था।



वे बाघ को उसके शक्तिशाली शरीर में देख सकते थे, जो आसानी से पांच फुट लंबा था, और सहजता से सुंदर ढंग से घूम रहा था।

बच्चे इस दृश्य को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए और जीप का पीछा करना चाहते थे। लेकिन सुशीला दीदी जानती थीं कि कोई भी जोखिम नहीं उठाना चाहिए। वे वहीं खड़े रहे और सुरक्षित दूरी से बाघ को देखते रहे।

बाघ अपनी धीमी चाल जारी रखते हुए उमरावन की ओर जाने वाली सड़क पर आगे बढ़ रहा था। [यह वही सड़क थी जहाँ राहुल, गोनी बाई और जानका बाई ने एक बार टॉर्च की रोशनी में बाघ को देखा था, यह इलाका ऐसी मुठभेड़ों के लिए जाना जाता है।]

कुछ देर तक वे प्रतीक्षा करते रहे, उनके दिलों में भय और विस्मय का मिश्रित भावनाये थी। जंगल शांत हो गया, मानो उस शानदार जानवर के प्रति समादर में अपनी सांस रोक ली हो। अंततः बाघ घने पत्तों में गायब हो गया, जंगल की आवाज़ें धीरे-धीरे सामान्य हो गईं।



तत्काल खतरा टलने के बाद, सुशीला दीदी और उनके परिवार ने अपनी यात्रा फिर से शुरू की। बाइक का इंजन फिर से चालू हो गया और वे सावधानी से सड़क पर आगे बढ़ते रहे, बच्चे अब पहले से ज़्यादा शांत हो गए थे, नज़दीकी मुठभेड़ के कारण उनका उत्साह कम हो गया था।

जैसे-जैसे वे गांव की ओर वापस लौटते गए, शाम की हवा ठंडी होती गई और जंगल में अंधेरा छाने लगा। सुशीला दीदी ने सोचा, 'अब तक पर्यटक अपने होटलों में पहुंच गए होंगे।' और वे पहुंच गए थे - उन लोगों के लिए एक सफल यात्रा के बाद जो सिर्फ बाघ देखने आए थे, और उनके लिए एक भयावह यात्रा जो बाघ के लिए नहीं आए थे - दोनों ही तरह से उनके पास बताने के लिए एक कहानी थी। उसी सड़क पर सुशीला दीदी अगले दिन जंगल में जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने के लिए लौटती हुई दिखाई देती थीं, गोनीबाई अपनी सब्जियाँ बेचने के लिए, आशा<sup>1</sup> कार्यकर्ता जनकबाई टीबी<sup>2</sup> रोगियों के लिए पीएचसी<sup>3</sup> में अगली अपॉइंटमेंट के लिए पत्रा जाने के लिए, स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए और उन सभी अन्य आदिवासियों के लिए जिन्हें अपनी दैनिक मजदूरी के लिए शहर जाना पड़ता है।

क्योंकि, हम बाघ के डर से सड़क और अपनी दैनिक दिनचर्या को नहीं छोड़ सकते।

- 
- 1 आशा - मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता
  - 2 टीबी - क्षय रोग जो इन गांवों में एक व्यापक स्वास्थ्य समस्या है
  - 3 पीएचसी - प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र



## निष्कर्ष

आदिवासी समुदाय मानते हैं कि जंगल का जीवन सह-अस्तित्व का संवाद है। उनके पारंपरिक जीवन इस प्राकृतिक वास में ज्ञान और छोटे-बड़े जीवों से सीखने से भरपूर है। बाहरी विकास ने इस ज्ञान को बेरहमी से कुचल दिया है और उन्हें अपने ही भूमि में 'अतिक्रमणकारियों' के रूप में माना है, जिससे उनकी प्रथाएं विनाशकारी दिखाई पड़ती हैं। वैश्विक डीकार्बोनाइजेशन राजनीति के तहत जंगलों को निजी संस्थाओं को सौंप दिया जा रहा है, जबकि सामुदायिक संरक्षण और सह-अस्तित्व प्रथाओं को अपराध घोषित किया जा रहा है। अधिक जंगलों को संरक्षित क्षेत्रों के अंतर्गत लाया जा रहा है और स्थानीय समुदायों के साथ किसी भी सम्मति के बिना कई और बाघ अभयारण्य और अन्य वन्यजीव अभयारण्य घोषित किए जा रहे हैं। आदिवासियों को हर दिन अपने और अपने बच्चों और मवेशियों के जीवन को जोखिम में डालने के लिए मजबूर किया जाता है, क्योंकि वे संरक्षण के असंवहनीय तरीकों को देखते हैं। यदि और बेहतर, उन्हें कहा जाता है कि वे 'स्वेच्छा से' जंगल छोड़ दें।

आदिवासी पूछते हैं कि हमारे जंगलों में कितने बाघ और बढ़ेंगे? क्या बाघ अभयारण्य और बाघ गलियारे बढ़ाना ही संरक्षण का एकमात्र उपाय है? हम अब अपने तालाबों में मछली नहीं पकड़ सकते या चारा नहीं इकट्ठा कर सकते। हमारे जंगली सूअरों और छोटे-बड़े पक्षियों और कीड़ों का क्या होगा, जिन्हें बागानों में प्रवेश नहीं मिलेगा, जहाँ बैठने या चोंच मारने लायक कोई पेड़ नहीं है? बाघों, लोगों और हमारी फसलों का क्या होगा जब हमारे सारे स्थान अव्यवस्थित हो रहे हैं? बाघ हमसे समझौता करता है और हम बाघ से समझौता करते हैं, लेकिन कोई भी हमसे या बाघ से समझौता नहीं करता।

क्या हम उन लोगों को बाहर निकालकर समाधान ढूंढ सकते हैं जो संरक्षण का काम करते हैं और अपने पारिस्थितिकी तंत्र की देखभाल करते हैं।



और आग के किनारे और भी कई सवाल और कहानियाँ हैं, जबकि बाघ छाया में सुनता है और फुसफुसाता है और अपनी राजसी निगाहों से आदिवासी को बताता है - मुझे भी ठगा हुआ महसूस हो रहा है। अब समय आ गया है कि हम संरक्षण की अपनी भाषा बोलें।

कुर, कुर, दहाड़, दहाड़, हमें आते हुए सुनो।





[www.dhaatri.org](http://www.dhaatri.org)

**धात्री - महिलाओं और बच्चों  
के लिए एक संसाधन केंद्र**

प्लॉट नंबर 10, लोटस पॉन्ड कॉलोनी,  
एम.डी.फार्म रोड, तिरुमलगिरी,  
सिकंदराबाद, तेलंगाना - 500015

**हमसे संपर्क करें**

[dhaatri@gmail.com](mailto:dhaatri@gmail.com) | +91 40 29552404

इंस्टाग्राम: @dhaatrirc

फेसबुक: [fb.com/Dhaatricentre](https://www.facebook.com/Dhaatricentre)

एक्स: @DhaatriC